डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 20-08-2020

विषय- वैदिक साहित्य

यजुर्वेद में ब्रह्मोद्य या प्रहेलिकाएँ

यजुर्वेद में कुछ ऐसी रचनाएं हैं, जिन्हें ब्रह्मोद्य या प्रहेलिकाएँ कहा जाता है । 'ब्रह्मोद्य' शब्द का अर्थ है - 'ब्रह्म या पवित्र गान' पर आधारित रचना। यजुर्वेद में कुछ ऐसी विशिष्ट प्रकार की प्रहेलिकाएँ है जिनका प्रयोग, पुरोहितगण यज्ञ के अवसर पर वार्तालाप के रूप में किया करते थे । इनका उद्देश्य यज्ञ के अवसर पर मनोरंजन करना और ज्ञान की परीक्षा करना था। यह मान्यता है कि देवतागण केवल आहुति रूप भोजन से ही तृप्त नहीं होते, वे मनोरंजन भी चाहते हैं। अतः यज्ञ के अवसर पर देवताओं का मनोरंजन करके, उनसे अपने अभीष्ट की पूर्ति के लिए इन प्रहेलिकाओं का उपयोग होता था।

यजुर्वेद की 'वाजसनेयी संहिता' के 23वें अध्याय में और 'तैत्तिरीय संहिता' के सातवें अध्याय में ऐसी अनेक प्रहेलिकाएँ है। इनका प्रयोग कुछ अवसरों पर प्रहेलिका-क्रीड़ा के रूप में होता था। ये प्रहेलिकाएँ दो प्रकार की है -

1. वे प्रहेलिकाएँ जिनका संबंध ब्राह्मण ग्रंथों की यज्ञ संबंधी रहस्यात्मकता से है तथा उपनिषदों की दार्शनिकता से है।
2. वे प्रहेलिकाएँ है जो लोक प्रचलित हैं और सामान्य ज्ञान पर आधारित है । उदाहरण के लिए, यहां वाजसनेयी संहिता के 23वें अध्याय का मंत्र उद्धृत किया जाता है । यह प्रहेलिका इस प्रकार है -

   'होता 'नाम का पुरोहित प्रश्न करता है-
   "क: स्विदेकाकी चरति क उ स्विज्जायते पुन:। किं स्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपने महत् ।।
   अर्थात् कौन है, जो एकाकी वितरण करता है? कौन है, जो पुनः उत्पन्न हो जाता है? हिम (ठंड) की औषध क्या है? और बीज बोने के लिए कौन सा बड़ा स्थान है?

   'अध्वर्यु' (नाम का पुरोहित) इसका उत्तर देता है -
   "सूर्य एकाकी चरति चंद्रमा जायते पुन:। अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरा रावपनं महत् ।।
   अर्थात् सूर्य रूपी ब्रह्म अकेला विचरण करता है। चंद्रमा पुनः उत्पन्न हो जाता है। हिम की औषध अग्नि है और बीज बोने के लिए पृथ्वी बड़ा क्षेत्र है।

इस प्रकार प्रार्थना मंत्रों की भांति ही ,ये प्रहेलिकाएँ भी देव पूजा का महत्वपूर्ण अंग था। अतः यजुर्वेद में आए विभिन्न प्रकार के मंत्रों से ज्ञात होता है कि इस काल में यज्ञ का महत्व बहुत था और यज्ञीय कार्य धीरे-धीरे बहुत ही रहस्य पूर्ण बन गए थे । यज्ञ को और यज्ञीय मंत्रों को सृष्टि की नियामक शक्ति से जोड़ दिया गया था। यजुर्वेद में अनेक ऐसे मंत्र है जिससे वर्षा करायी जा सकती है या शत्रु पर विजय प्राप्त की जा सकती है । इस प्रकार के कार्यों के लिए मंत्रों से प्राकृतिक शक्तियों को प्रभावित करना आवश्यक था। इसी कारण ऐसे अनेक मंत्र इंद्रजाल से संबंधित से प्रतीत होते हैं। इसके अनेक प्रार्थनाओ के अंतिम भाग में, उनके प्रभाव का वर्णन मिलता है। ऐसे स्थानों पर प्राय: पशुओं आदि की प्राप्ति को, फल के रूप में देखा गया है ।

विषय की दृष्टि से शुष्क, नीरस और कर्मकण्डीय कृति होने के कारण यजुर्वेद संगीता का साहित्यिक महत्व नगण्य ही है। इस संहिता का महत्व धर्म के...